मानव मूल्यों को बढ़ाने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका

(Role of Family Society and Educational Institutions in Enhancing Human Values)

विनीत
अभय प्रताप सिंह
अनामिका भारती
अर्चना सिंह
अजय गौतम
विधार्थी
आईएफटीएम विश्वविद्यालय मुरादाबाद

सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थानों में मानवीय मूल्यों को बढ़ाना है। इस शोध पत्र के माध्यम से परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थानों में मानवीय मूल्यों के महत्व का पता लगाने का एक प्रयास किया गया है। मानव समाज मानवीय मूल्यों के बिना सां केतिक रूप से टिक नहीं सकता। इसलिए इस विषय पर बात करना और वर्तमान परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थानों में मानवीय मूल्यों के वारे में जागरूकता लाना आवश्यक है। इस तथ्य से कोई इनकार नहीं करता है कि वर्तमान समाज बहुत अधिक संकटों का सामना कर रहा है। मानवीय मूल्य संकट आधुनिक समाज का एक ज्ञात तथ्य है।

शब्दाबली (Key Words)-: *मानव भाईचारे, मित्रता, सहानुभूति, करूणा, प्रेम*

परिचय (Introduction)

मूल्य वे मान्यताएँ हैं जो धारक के लिये उपयोगिता या महत्व में अंतर्निहित मूल्य है या सिद्धान्त, मानक या गुण सार्थक या वांछनीय हैं। मानव मूल्य आत्म–अवधारणा का एक महत्वपूर्ण पहलू है और एक व्यक्ति के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त के रूप में कार्य करता है। आज के समय और व्यावसायिक जगत में मानवीय मूल्यों की आवश्यकता है। मानवीय मूल्य वे विशेषताएँ है जो लोगों को मानवीय तत्व को ध्यान में रखने के लिए मार्गदर्शन करती है जब कोई अन्य मनुष्यों के साथ बातचीत करता है। उनके पास कई सकारात्मक चरित्र है जो लोगों के बीच मानवता के बंधन बनाते है और इस प्रकार सभी मनुष्यों के लिए मूल्य रखते है। वे दूसरे के मानवीय सार के लिए मजबूत सकारात्मक भावनाएँ है। यह वह है जो हम दूसरों से अपेक्षा करते है कि वे हमसे करें और हम दूसरे मनुष्यों को क्या देना चाहते है। इस मानवीय मूल्यों पर बंधन, आराम, आश्वासन और शांति की खरीद का प्रभाव है। मानव मूल्य समाज के भीतर किसी भी व्यावहारिक जीवन का आधार है। वे एक ड्राइव के लिए जगह बनाते हैं, एक दूसरे की ओर एक आंदोलन, जो शांति की ओर जाता है। सरल शब्दों में, मानवीय मूल्यों को सार्वभौमिक

के रूप में वर्णित किया जाता है और मनुष्यों द्वारा साझा किया जाता है, चाहे उनका धर्म, उनकी राष्ट्रीयता, उनकी संस्कृति और उनका व्यक्तिगत इतिहास स्वभाव से, वे दूसरों के लिए विचार प्रेरित करते है।

मानव मूल्य (Human Value):-मानव भाईचारे, मित्रता, सहानुभूति, करूणा, प्रेम, खुलेपन, सुनने, स्वागत, स्वीकृति, मान्यता प्रशंसा, ईमानदारी, निष्पक्षता, निष्ठा, साझाकरण, एकजुटता, नागरिकता, सम्मान और विचार के लिए है। इन मूल मूल्यों का कार्य प्रत्येक मानव को शांति के संबंधों को स्थापित करने के लिए उच्चतम या मानवीय मूल्य को महसूस करने या बनाए रखने में सक्षम बनाता है और फिर भी यह अनिश्चित रहता हैं। इसकी समझ उम्र (बच्चे, किशोर, वयस्क), किसी की शिक्षा और आसपास की संस्कृति के अनुसार भिन्न होती है। अन्य मूल्यों के साथ संयुक्त होने पर यह बेहतर समझा जाता हैं। एक स्वभाव जो कि नागरिकता से अधिक गहरा है, विचार के बहुत करीब है, और प्रशंसा के करीब है। वास्तव में, किसी का सम्मान करने के लिये, किसी को उसके कुछ मानवीय गुणों की सराहना करने में सक्षम होना चाहिए, भले ही वह उसके विचारों या अतीत के व्यवहार की सराहना न करें।

सत्य, धार्मिक आचरण, शांति, प्रेम और अंहिसा जैसे कई सार्वभौमिक मानवीय मूल्य सीधे मानव व्यक्तित्व के भौतिक, बौद्धिक, भावनात्मक मानस और आध्यत्मिक पहलुओं से जुड़ें है। एक बेहतर और मानवीय समाज के लिये इन मूल्यों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। " वैल्यू सिस्टम" मान्यताओं का एक स्थायी संगठन है, जो महत्व के एक निरंतरता के साथ आचरण के बेहतर तरीकों से संबंधित है। इस प्रकार मूल्य प्रणाली में दूसरों के महत्व के साथ सह–मूल्यों का अलग–अलग महत्व है। उदाहरण के लिये, कोई व्यक्ति सफलता पर ईमानदारी को महत्व दे सकता है।

आंतरिक और बाहरी मूल्य (Intrinsic and Extrinsic value):- एक आंतरिक मूल्य एक ऐसा मूल्य है जो किसी के पास स्वंय के संदर्भ सहित अन्य चीजों से स्वतंत्र है। एक आंतरिक मूल्य एक ऐसी चीज है जो अपने आप में अच्छी है और जिस चीज का वास्तविक आंतरिक मूल्य है, वह खुशी है। कोई भौतिक चीजें नहीं है जिसका आन्तरिक मूल्य है। उदाहरण के लिए, परिणामीवाद के एक मौलिक रूप के अनुसार क्या कोई कार्यवाही नौतिक रूप से सही है या गलत इसका विशेष रूप यह है कि क्या इसके परिणाम आंतरिक रूप से किसी कार्यवाही की तुलना में बेहतर है जो परिस्थितियों में प्रदर्शन कर सकते है।

एक बाहरी मूल्य एक संपत्ति है जो किसी चीज के अन्य चीजों के साथ संबंध पर निर्भर करता है। बाहय मूल्य वह मूल्य है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि यह कितना आंतरिक मूल्य उत्पन्न करता है। इसका कारण यह है कि चीजों का बाहरी मूल्य है, क्योंकि वे स्वंय खुशी या खुशी की ओर ले जाते है या वे अन्य चीजों की एक श्रृंखला का नेतृत्व करते है जो अंततः खुशी का कारण बनती है। प्रसन्नता (आंतरिक मूल्य) अंतिम छोर है, जिसमें बाहरी मूल्य की सभी चीजें साधन है।

मानवीय मूल्यों की आवष्यकता (Need of Human Vaulues):- किसी के जीवन को आकार देने और वैश्विक मंच पर प्रदर्शन का अवसर देने के लिए मूल्य शिक्षा हमेशा आवश्यक है। माता–पिता, बच्चों, शिक्षकों आदि के बीच मूल्य शिक्षा की आवश्यकता लगातार बढ़ रही है क्योंकि हम लगातार बढ़ती हिंसक गतिविधियों, व्यवहार संबंधी विकारों और समाज में एकता की कमी आदि को देखते है। मूल्य शिक्षा हमें अपनी आवश्यकताओं को समझने और हमारे लक्ष्यों को सही ढंग से देखने में सक्षम बनाती है और उनकी पूर्ति के लिए दिशा का संकेत भी देते है। यह हमारे भ्रमो और विरोधाभासों को दूर करने में भी सहायता करता है और हमें तकनीकी नवाचारों का सही उपयोग करने में सक्षम बनाता है।

भारतीय समाज में मानव मूल्यों को विकसित करने के लिए अलग–अलग विचारों की आवश्यकता है। अतीत से विरासत में मिले कई पारंपरिक मूल्य भविष्य के नागरिकों द्वारा अनुकूलित होने के लिए वैध और सच्चे बने हुए है लेकिन उभरते भरतीय संस्कृति में समस्याओं का सामना करने के लिए कई नये मूल्य है। वर्तमान में, नकारात्मक मानवीय मूल्य ऊपरी पक्ष में है। यह मूल्य शिक्षा की उपेक्षा के कारण हो सकता है जिसमें लोगो के दिमाग मे अस्पष्टता और अनुशासनहीनता पैदा की।

परिवार और समाज में मानवीय मूल्यों का निर्माण (Role of Human Vaulues in family and Society):- साहित्य के थोक ने दिखाया है कि परिवार और समाज बच्चे के नैतिक मूल्यों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। माता–पिता और बच्चों के बीच एक मजबूत संबंध है, जो बच्चे के व्यक्तित्व को निर्धारित करता है। परिवार वह आधार है जिस पर मूल्यों का निर्माण किया जाता है।

नैतिक मूल्य जैसे–सत्यता, खुशी, शांति, न्याय बच्चों के विचारों, भावनाओं और कार्यो में लिप्त है और वे आदर्शो और मानकों के रूप में कार्य करते है जो उनके जीवन में अनके कार्यो को नियंत्रित करते है। परिवार में प्रचलित मूल्य प्रणाली युवा परिवार के सदस्यों के लिए स्वचालित हो जाती है, अगर उन्हें नैतिक मूल्यों को अच्छी तरह से सिखाया जाए। परिवार के पास बच्चों को कई सच्चाइयों और मूल्यों पर पारित करने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, जो भी समाज संस्कृति या समय है जीवन में अपना स्थान पूरा करने के लिए योग्यताएँ है।

परिवार, लोगों और समाज के प्रति बच्चे के दृष्टिकोण को आकार देता है और बच्चे में मानसिक विकास में मदद करता है और उसकी महत्वकांक्षाओं और मूल्यों का समर्थन करता है। परिवार में आनंदित और हँसमुख वातावरण प्यार, अहंकार, सहनशीलता और उदारता का विकास करेगा। एक बच्चा अपने आस–पास जो देखता है उसे मॉडलिंग करके अपना व्यवहार सीखता है।

परिवार एक बच्चे को सामाजिक रूप से मदद करने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है और बच्चे की प्रगति पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। संयुक्त परिवार प्रणाली, परिवार में बड़ों की उपस्थिति बच्चों के सामाजिक और नैतिक विकास में प्रभावी भूमिका निभाता है। यह परिवार की युवा पीढ़ी को मानवीय मूल्यों की नकल करने और बुजुर्गो के बीच उनकी नकारात्मक मानसिक प्रवृतियों को मिटाने में भी मदद करेगा। छात्र अपने माता–पिता, अन्य परिवार के बुजुर्गो के साथ स्वंय को पहचानता है और उन्हें अनुकरण और नकल के लिए अपने व्यक्तिगत मॉडल के रूप में अपनाता है। बच्चे के जीवन में परिवार की भागीदारी से ही व्यवहार संबंधी समस्याएँ ठीक होती है क्योंकि वे अपना अधिकांश समय किशोरावस्था में माता–पिता के साथ बिताते है।

परिवार द्वारा पैदा किए गए सामाजिक मानक और रीति–रिवाज बच्चे के लिए भावनात्मक और शारीरिक आधार प्रदान करते हैं। परिवार द्वारा विकसित मूल्य इस बात की नींव है कि बच्चे दुनिया में कैसे सीखते है और बढ़ते है तथा कार्य करते हैं। ये मान्यताएं बच्चे के जीवन के तरीके को प्रसारित करती है और समाज में एक व्यक्ति में बदल जाती है। ये मूल्य और नैतिकता प्रत्येक व्यक्ति को उसके कार्यो में मार्गदर्शन करते है। बच्चों को उनके परिवार के सदस्यों द्वारा पढ़ाये गये मूल्य और दिए गए विचारों के कारण एक अच्छा व्यक्ति बन जाता है। विचार पीढ़ी से पीढ़ी तक पारिवारिक मूल्यों को बनाते है। परिवार द्वारा रीति–रिवाजों और परम्पराओं का पालन और पढ़ाया जाता है जिससे परिवार अनुशासित और संगठित जीवन जीता है। परिवार के मूल्यों से बच्चे अपने विचारों को मजबूत करने में सहायता प्राप्त करते है। बच्चे में सही और गलत क्या है। एक मजबूत भावना उत्पन्न होती है और विद्यालय की मांग का शिकार होने की संभावना कम होती है।

मूल्यों को बढ़ाने में शैक्षिक संस्थानों की भूमिका (Role of educational institutions in inculcating values):- मूल्य शिक्षा हर उस मूल्य प्रणाली को बेहतर बनाने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण है जिसे वह उपयोग करने के लिए रखता है। एक बार कोई व्यक्ति अपने जीवन के मूल्यों को समझ गया है तो वह अपने जीवन में विभिन्न विकल्पों की जाँच/नियंत्रण कर सकता है। कई रिपोर्ट यह संकेत देते है कि शैक्षिक संस्थानों का उद्देश्य केवल शिक्षा को पढ़ाना नहीं होना चाहिए, बल्कि मूल्यों और बच्चों व किशोरों के कौशल में सुधार करना भी होना चाहिए।

संस्थानों में छात्र एक छोटे समाज के सदस्य होते है जो उनके नैतिक विकास पर बहुत प्रभाव डालते हैं। शिक्षक संस्थान में छात्रों के लिए रोल मॉडल का काम करते है। वे अपने नैतिक व्यवहार को बढ़ाने में एक प्रमुख भूमिका निभाते है। संस्थान में सहकर्मी दूसरों के लिए धोखा देने, झूठ बोलने, चोरी करने और विचार करने के बारे में आत्मविश्वास फैलाते है। शैक्षणिक संस्थान अनौपचारिक तरीके से भी बच्चों को मूल्य शिक्षा प्रदान करते है। वे छात्रों में नैतिक व्यवहार विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

सामान्य चरण इस प्रकार है (Common steps are as follows) :–

1) जवाबदेही (Accountability):- छात्र को अपने कार्यो की जवाबदेही के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और दूसरों का सम्मान करना व्यवहार सीखना चाहिए।

2) रोल मॉडल (Role Model):- परिवार के बाहर शिक्षक छात्र का पहला रोल मॉडल है। जब छात्र दूसरों के लिए चिंता दिखाते हुए मॉडल को देखता है और उन्हें उनके अच्छे कामों के लिए प्रेरित करता है तथा उनके शैक्षणिक मुद्दे के साथ सहयोग तथा सहायता करता है, तो छात्र उन्हें देखकर और साथियों के साथ नकल करके सीखते हैं।

3) मदद करना (Helping):- छात्र को संस्थान में बुनियादी नैतिकता और मूल्य सिखाया जाता है। उन्हें अनेक गतिविधियों, कहानियों के माध्यम से विचार पर जोर देकर सिखाया जाना चाहिए, जो उन्हें अधिक सहायक व्यवहारों से जोड़ने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

4) प्रषंसा (Appreciation) :- शिक्षक को समाज–समर्थक व्यवहार विकसित करने के लिए छात्र की सराहना करनी चाहिए। यह मूल्यांकन किया जाता है कि मानवीय मूल्य व्यक्ति के जीवन को बढ़ाते है लेकिन वर्तमान परिदृश्य में ये मूल्य कई देशों में बिगड़ते है। मानवीय मूल्यों में कमजोर पड़ने की यह प्रवृति न केवल राष्ट्र के विकास के भविष्य के लिए गंभीर खतरा है बल्कि इसके अस्तित्व, सम्मान और अधिकार के लिए भी है। युवा वर्ग में वांछनीय मूल्यों को आत्मसात करने के लिए माता–पिता शिक्षकों और समाज को समर्पित करता है।

संक्षेप में, मान व्यक्तित्व और सामाजिक के बीच सेतु हैं। जीवन का लक्ष्य मनुष्य को अपने विचारों और दृष्टिकोणों को एकीकृत करने के लिये खुद को आचरण प्रदान करना चाहिये और अपने जीवन तरीके को आकार देना चाहिए। परिवार, समूह और समाज सामान्य मूल्यों को साझा करते हैं

निष्कर्ष

(Conclusion):-

वर्तमान मानव संस्थाओं में मानवीय मूल्यों की बहुत अग्रणी भूमिका हैं। मानवीय मूल्य सामाजिक मूल्यों पर निर्भर करते है। मानव मूल्य अब बहुत तेजी से पीछे हट रहे है जिसके लिए हम मनुष्य सवसे ज्यादा जिम्मेदार हैं। स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की शिक्षा पर मूल्य आधारित शिक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए। मानव मूल्य को मानव व्यवहार का एक नैतिक मानक माना जाता है। इसलिए मानवीय मूल्यों को संरक्षित किया जाना चाहिए। आज समाज के कई पहलुओं पर कई शोध और प्रकाशन किये जाने चाहिए जो आधुनिक युग के बाद मानव समुदाय के मानवीय मूल्यों को बनाए रखने में मदद करते है। मानवीय मूल्यों को वैश्विक समस्याओं के समाधान की कुँजी के रूप में माना जा सकता है। कुछ विश्वविद्यालयों ने छात्रों की मानवता में सुधार के लिए मानवीय मूल्यों और नैतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम निर्धारित किया है। यह वर्तमान समाज के लिए और शैक्षणिक संस्थानों के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

- Alston, Philip, ed. Non-State Actors and Human Rights. Oxford University Press, USA, 2005.
- Alston, Philip, and James Crawford, eds. The Future of UN Human Rights Treaty Monitoring. Cambridge University Press, 2000.
- Alston, Philip, and Frederic Megret, eds. The United Nations and Human Rights: A Critical Appraisal. Second Edition. Oxford University Press, 2014.
- Annan, Kofi. The Circle of Empowerment: Twenty-five Years of the UN Committee on the Elimination of Discrimination Against Women. Edited by Hanna Schopp-Schilling and Cees Flinterman. The Feminist Press at CUNY, 2007.
- Bassiouni, M. Cherif, and William A. Schabas, eds. New Challenges for the UN Human Rights Machinery: What Future for the UN Treaty Body System and the Human Rights Council Procedures? Intersentia, 2011.
- Bayefsky, Anne F. The UN Human Rights Treaty System in the 21st Century. Kluwer Law International, 2000.
- Bayefsky, Anne Fruma. How to Complain to the UN Human Rights Treaty System. Martinus Nijhoff Publishers, 2003.
- Bornstein, Erica, and Peter Redfield. Forces of Compassion: Humanitarianism Between Ethics and Politics. Edited by Erica Bornstein and Peter Redfield. SAR Press, 2011.
- Brysk, Alison. Global Good Samaritans: Human Rights as Foreign Policy. Oxford University Press, USA, 2009.
- Brysk, Alison, and Austin Choi-Fitzpatrick, eds. From Human Trafficking to Human Rights: Reframing Contemporary Slavery. University of Pennsylvania Press, 2011.
- Butler, Clark, ed. Child Rights: The Movement, International Law, and Opposition. Purdue University Press, 2012.
- Calhoun, Craig. Nations Matter: Culture, History and the Cosmopolitan Dream. 1st ed. Routledge, 2007.